अल अ-सलुल मुसफ़्फ़ा

फ़ी अक़ाइदे अरबाबे सुन्नतिल मुस्तफ़ा

सन् 1298 हि.

अल मारुफ़ ब

अक़ाइदे अहले सुन्नत



www.jannatikaun.com

मुसन्निफ़

मौलाना मौलवी सय्यद शाह **अबुल हुसैन अहमदे नूरी**

अल मुलक्कब ब मियां साहेब क़िब्ला क़ादरी बरकाती आले रसूल

रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम ०

या रसूलल्लाहि जम्मिल हा लना

ऐ अल्लाह के रसूल हमारी हालत को ख़ूबसूरत बना दीजिये।



या हबीबल्लाहि हस्सिन क़ा लना

ऐ अल्लाह के हबीब हमारी गुफ़्तगू में हुस्न पैदा कर दीजिये



या मंबइल कमालि व या साहिबज़्ज़फ़र

ऐ तमाम ख़ूबियों के हबीब सर चश्मा और फ़तह व ज़फ़र वाले

JANN KAUN?



मिन फ़दलिका शरीफ़ि लक़द कर्रमल बशर

बिला शुबह इंसान आपके कसरते एहसान के बाइस

या इज़्ज़त हो गया



ला तुमकिनुल नुऊतु कमा अन्ता अहलहा

जिन औसाफ़े जमीला से आप मुज़य्यन हैं उनका तज़किरा

ग़ैर मुमकिन है



बाद अज़ ख़ुदा बुज़ुर्ग तूई क़िस्सा मुख़्तसर

तज़किरा ग़ैर मुमकिन है बिल आख़िर ख़ुदा के बाद

आप बुज़ुर्गी के सज़ावार हैं

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

अल अ-सलुल मुसफ़्फ़ा

फ़ी अक़ाइदे अरबाबे सुन्नतिल मुस्तफ़ा

सन् 1298 हि.

अल मारूफ़ ब

अक़ाइदे अहले सुन्नत

मुसन्निफ़

मौलाना मौलवी सय्यद शाह **अबुल हुसैन अहमदे नूरी**

अल मुलक़्क़ब ब मियां साहेब क़िब्ला क़ादरी बरकाती आले रसूल

रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम 0

सिराजिस्सालिकीन नूरिल आरेफ़ीन, बदरुल कामेलीन हज़रत सय्यद शाह अबुल हुसैन अहमद नूरी

रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

विलादत शरीफ़ : 19 शव्वालुल मुकर्रम सन् 1255 हि. मुताबिक़ 26 दिसम्बर सन् 1839 ई., बरोज़ पन्ज शम्बा (जुमेरात) मारेहरा शरीफ़ में हुई।

वालिदे माजिद : आपके वालिदे माजिद का नामे नामी हज़रत सय्यद शाह ज़हूर हसन रहमतुल्लाहे अलैहि

ख़ानदानी हालात : आप सादात हुसैनी ज़ेदी वासिती बिल ग्राम, वालिदे माजिद के जानिब से हैं।

नीज़ वालिदा माजिदा हज़रत सय्यद मोहम्मद सुग़रा बिलग्रामी रहमतुल्लाहे अलैह की बीसवीं पुश्त में हैं।

तालीमो तरबियत : आपकी उम्र शरीफ़ जब ढाई साल की हुई तो वालिदे माजिद का विसाल हो गया, इस लिये आपकी तालीमो तरबियत की तमाम तर ज़िम्मेदारी जद्दे अमजद हज़रत सय्यद शाह आले रसूल मारेहरवी रहमतुल्लाहे तआला अलैह की आग़ोशे तरबियत में हुई।

नोट : हज़रत सय्यद शाह आले रसूल रहमतुल्लाहे अलैहि, मुजद्दिदे आज़म, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ रहमतुल्लाहे अलैहि के पीरो मुर्शिद हैं।

मकतब में बाक़ायदा दाख़ले के बाद आपने फ़ारसी, अरबी, फ़िक़ह, तफ़्सीर, हदीस, लुग़त, मन्तिक़ व दीगर उलूमो फ़ुनून हासिल फ़रमाया।

उस्ताज़े उलूमे बातिनिया : आपने जिनसे उलूमे बातिनी का इक्तिसाब फ़रमाया उसमें सरे फ़ेहरिस्त शैख़े तरीक़त हुज़ूर सय्यद शाह आले रसूल अहमदी रहमतुल्लाहे अलैह हैं और आपने ही ख़िलाफ़त व इजाज़त दी, चुनान्चे राहे मअरिफ़त की तकमील के बाद आपको इजाज़ते आम मरहमत फ़रमाई।

नूरी मियाँ सरकार सिलसिलए आलिया क़ादरिया रज़विया के अड़तीसवें (38) इमाम व शैख़े तरीक़त हैं।

नूरे जां व नूरे ईमां नूरे क़ब्रो हश्र दे
बुल हुसैने अहमदे नूरी लिक़ा के वास्ते

रूहानी इक्तिसाबे फ़ैज : हुज़ूर नबिये मुकर्रम सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम की ज़ियारते मुक़द्दसा और मुसाफ़हा व मुआनक़ा।

हज़रत अमीरुल मोमिनीन सय्यदुना अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम व हज़रत सय्यदुना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा की ज़ियारत फ़रमाई।

हुज़ूर सय्यदना गौसे आज़म शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी और हुज़ूर सय्यदना ग़रीब नवाज़ ख़्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा और भी औलियाए किराम की ज़ियारत फ़रमाई। और उन हज़रात से भी इक्तिसाबे फ़ैज फ़रमाया।

अख़लाक़े हसना : आप हाजतमन्दों से निहायत नर्मी से कलाम फ़रमाते, छोटे बच्चों को बकमाले मुहब्बत व शफ़क़त पास बुलाते, सर पर हाथ फैरते और उनकी बातें सुनते, जवानों पर इनायत और बूढ़ों का वक़ार फ़रमाते और यही हिदायत अपने खुद्दाम को भी फ़रमाते।

आपके शब व रोज़ : आख़री वक्त तक आपकी आदते करीमा रियाज़त, सौम, खिलअत, शबे बेदारी, तहज्जुद, तिलावत व ज़िक्रो वज़ाइफ़ की पाबन्दी रही, आपकी बचपन की इबादत व रियाज़त देखकर आपकी दादी साहिबा घबरा जाती और ऐसी मशक़्क़त भरी रियाज़त से रोकना चाहतीं तो आपके जद्दे अमजद फ़रमाते कि रहने दो, इनको ऐशो आराम से क्या काम ? यह कुछ और ही हैं और इनको कुछ और ही होना है, यह अक़ताबे सबआ यानी सात कुतुब में से एक कुतुब हैं, जिनकी बशारत हज़रत शाह बू अली क़लन्दर पानी पती और हज़रत शाह बदी उद्दीन कुतुब मदार रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा ने दी है और यही इस सिलसिलए बशारत के ख़ातिम हैं। (इरफ़ाने रज़ा, स. 485)

नूरी मियाँ रहमतुल्लाहे अलैहि की सवानेह हयात के किसी भी पहलू का तफ़्सीली ज़िक्र यहाँ मुमकिन नहीं क्योंकि उसके लिये दफ़्तर दरकार है

अदबी व शेअरी ज़ोक़ : आप कभी नूर और कभी नूरी तख़ल्लुस फ़रमाते। जेल में आपके कलाम से चन्द अशआर बतौरे इख़्तिसार मुलाहज़ा फ़रमाएं।

दूर आँखों से हैं और दिल में है जलवा उनका
सारी दुनिया से निराला है यह पर्दा उनका
दिल की आँखों से करे कोई नज़ारा उनका
निगह दीदए ज़ाहिर से है पर्दा उनका

वाह क्या कहना तुम्हारे वादए दमदार का
जिस से दिल ठहरा हुआ है हिज्र के बीमार का
तू भी चल के देख आ ग़ाफ़िल कि अब वह वक़्त है
पास से मुंह तक रहे हैं सब तेरे बीमार का

निगाहों में सब हैं तो पर्दे में तू है
छुपे सब नज़र से कि तू रू बरू है
खुदी का जो पर्दा उठे तो बता दें
न हम और कुछ हैं न कुछ और तू है

तसानीफ़ात

आपकी तसानीफ़ में बे शुमार इल्मी निकात मुज़मर हैं जिनका मुतालआ अहले इल्मो दानिश के लिये दीनी व दुनियावी फ़वाइद से खाली नहीं, वैसे तो तसनीफ़ात की फ़ेहरिस्त बहुत लम्बी है जिनका शुमार व बयान इस इज्माली तआरुफ़ में मौज़ूँ नहीं इसलिये हम यहाँ आपकी एक तसनीफ़े लतीफ़ अल अस्लिल मुसफ़्फ़ा फ़ी अकाइदे अरबाबे सुन्नतिल मुस्तफ़ा का तज़्किरा करते हैं जो अकाइद के बयान में अहले सुन्नत के लिये एक अनमोल तोहफ़ा है और जिसकी इशाअत मुझ आसी के लिये आपसे फ्यूजो बरकात के हुसूल का ज़रीआ और आख़िरत में निजातो मग़फ़िरत का ज़खीरा है।

अक़्दे मुबारक : आपका अक़्द शरीफ़ अम्मे मुकर्रम हज़रत छुट्टू मियाँ साहब रहमतुल्लाहे अलैहि की दुख़्तरे नेक अख़्तर से हुआ। ज़ौजए अव्वल साहिबा की वफ़ात के बाद हज़रत का दूसरा अक़्द अपने फूफा सय्यद मोहम्मद हैदर साहब की साहबज़ादी से हुआ, इन दोनों में किसी से भी कोई औलाद नहीं हुई।

ख़ुलफ़ाए किराम : अगरचेह हज़रत की कोई औलाद नहीं थी मगर आपकी रूहानी औलाद की तादाद बे शुमार हैं। ख़ुलफ़ाए किराम के अस्माए गिरामी वैसे तो अड़सठ (68) ख़ास हैं, हम सिर्फ़ दो बुज़ुर्गों के नाम शरीफ़ लि. ख रहे हैं।

मुजद्दिदे आज़म, आला हज़रत अश्शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ फ़ाज़िले बरैलवी रहमतुल्लाहे अलैहे

हज़ूर सय्यदी व मुर्शिदी ताज्दारे अहले सुन्नत कुतुबे आलम, मुफ़्तिये आज़मे हिन्द, अश्शाह मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ क़ादरी बरैलवी, आप हज़रत के

मुरीद भी हैं और खलीफ़ा भी।

आपकी बेअतो ख़िलाफ़त का मुख़्तसर वाक़िआ यह है कि जब सरकार मुफ़्तिये आज़मे हिन्द अलैहिर्रहमह की विलादत हुई तो सरकार रदियल्लाहो अन्हो ने आला हज़रत रदियल्लाहो अन्हो से फ़रमाया, मौलाना जब मैं बरैली शरीफ़ आऊँगा तो उस बच्चे को ज़रूर देखूँगा, वह बहुत ही मुबारक बच्चा है। चुनाँचे जब आप बरैली शरीफ़ रौनक़ अफ़रोज़ हुए तो उस वक़्त हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रहमतुल्लाहे अलैहि की उम्र शरीफ़ सिर्फ़ छः माह की थी। ख़्वाहिश के मुताबिक़ बच्चे को देखा और उस नेअमत के हुसूल पर आला हज़रत को मुबारकबाद दी और फ़रमाया यह बच्चा दीन व मिल्लत की बड़ी ख़िदमत करेगा और मखलूके ख़ुदा को इसकी ज़ात से बहुत फ़ैज पहुँचेगा, यह बच्चा वली है यह फ़ैज का दरिया बहाएगा। यह फ़रमाते हुए हज़रत नूरी मियाँ रहमतुल्लाहे अलैहि ने अपनी मुबारक उंगलियाँ बलन्द इक़बाल बच्चे के दहने मुबारक में डाल कर मुरीद किया और उसी वक़्त तमाम सलासिल की इजाज़त व ख़िलाफ़त भी अता फ़रमाई।

अक़्वाले ज़र्री : (1) ज़बान को क़ाबू में रखना (2) ग़ीबत से एहतिराज़ करना (3) किसी भी आदमी को अपने से हक़ीर न जाने (4) महारिम (जिनका देखना हराम हो उन पर नज़र न डाले (5) जब बात कहे तो सच और इन्साफ़ की कहे (6) इनआमात व एहसानाते इलाहिया का एतिराफ़ करता रहे (7) मालो मताअ राहे ख़ुदा में सर्फ़ करता रहे (8) अपनी ही ज़ात के लिये भलाई का ख़्वाहां न रहे (9) पंजवक़्ता नमाज़ की पाबन्दी में लगा रहे (10) सुन्नते नबवी और इजमाए मुस्लेमीन का एहतिराम करे। बख़ील की सोहबतों से दूर रहो, बद मज़हबों की सोहबत से दूर रहो कि उसकी वजह से एतिक़ाद में फ़र्क़ व सुस्ती आती है।

विसाल : आपने 11 रजबुल मुरज्जब सन् 1334 हि. मुताबिक़ 31 अगस्त को विसाल फ़रमाया। दरगाहे आलिया बरकातिया मारेहरा के बरआमदा जुनूब में आपका मज़ारे मुक़द्दस ज़्यारतगाह खलाइक़ है।

दुआ ब वसीला हुज़ूर ग़ौसे पाक

हुज़ूर ग़ौसुस्सक़लैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के ग्यारह नाम की दुआ बहुत ही मशहूर और मुजर्रब मक़बूल है, बे शुमार अफ़राद ने इससे फ़ैज़ हासिल किया और फ़ायदा उठाया है। उसका तरीक़ा यह है कि उरूज माह में जुमेअरात के रोज़ मग़रिब की फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ने के बाद ग्यारह

मरतबा दुरूद शरीफ़ पढे। उसके बाद अल्लाह तआला से अपने मक़सद के मुतअल्लिक़ दुआ मांग कर सोएं। वह असमा यह हैं :

इलाही बहुरमत सय्यद मोहिय्युद्दीन
इलाही बहुरमत ग़रीब मोहिंय्युद्दीन
इलाही बहुरमत दुरवेश मोहिय्युद्दीन
इलाही बहुरमत मिस्कीन मोहिय्युद्दीन
इलाही बहुरमत शैख़ मोहिय्युद्दीन
इलाही बहुरमत सुल्तान मोहिय्युद्दीन
इलाही बहुरमत क़ुतुब मोहिय्युद्दीन
इलाही बहुरमत ख़्वाजा मोहिय्युद्दीन
इलाही बहुरमत मख़्दूम मोहिय्युद्दीन
इलाही बहुरमत वली मोहिय्युद्दीन
इलाही बहुरमत ग़ौस मोहिय्युद्दीन

अल्लाह तआला की तौहीद व तन्ज़ीह

अल्लाह तबारक व तआला एक है, उसका कोई शरीक नहीं। निराला है उसका कोई मिस्ल नहीं, एक है मगर न वह एक जो गिनती में आए, न वह एक जो दो से कम ठहराया जाए। गिनती शुमार और गिने जाने वाले, सब उसके बनाए हुए हैं। जब गिनती न थी वह जब भी एक ही था। सब ऐबों और नाकारह बातों से पाक है जो उसकी बड़ाई को ज़ेब नहीं देतीं। सब उसके मख़लूक़ और वह किसी का मख़लूक़ नहीं, सब उसके मुहताज और वह किसी का मुहताज नहीं। मां बाप जोरू बेटे व बेटियाँ तमाम रिश्तों से पाक है, दूसरा कोई उसके जोड़ का नहीं। हमेशा था और हमेशा रहेगा। और जैसा जब था वैसा ही अब है और जैसा अब है वैसा ही रहेगा।

न वह बदले न घटे, न बढ़े। न ज़माना उस पर गुज़रे न मकान उसे घेरे, हम पर कुछ ज़माना गुज़र गया, कुछ आने वाला है, उसके नज़दीक सब बराबर है। वह ज़माने में नहीं मगर हर ज़माने के साथ है। न वह जौहर है न अरज़, न जिस्म है न बदन, न लम्बा न चौड़ा, न फ़रबा न लाग़र, न उसके लिये शक्ल न सूरत, न हाल न कैफ़ियत, कि कोई कह सके क्यूँ कर है, कैसा है, किस वज़अ किस रंग का है। न मिक़दार न कम्मियत कि इस क़दर था या इतना है, न हद व इन्तिहा कि यहाँ से शुरू हुआ या इस जगह ख़त्म हुआ, न तरफ़ व जेहत कि आगे है या पीछे, दाहिने है या बाएं, सर की जानिब है या नीचे, न वह किसी चीज़ से मुरक्कब, न उसमें टुकड़े या क़िस्में निकलें, न वह किसी चीज़ में दर आए न उसमें कोई चीज़ दर आए, न वह किसी चीज़ से मिलकर एक हो जाए न कोई चीज़ उसके मुशाबह, न ज़िद, न मददगार, न मुख़ालिफ़ न यार, सब उसके क़ब्ज़ा व क़ुदरत में हैं और वह किसी के क़ाबू में नहीं।

न उसकी ज़ात अक़्ल में आ सके, न कोई नई बात उसमें पैदा हो,

आलम सब नया बना है, पहले कुछ न था। अगर वह अर्श पर मुतमक्किन है तो जब अर्श न था कहाँ था, अगर उसमें ज़मान व मकान व जेहत व मसाफ़त व कैफ़ व कम को गुज़र है तो यह चीज़ें न थीं वह क्यूं कर था, जैसा जब इन सब उमूर से पाक था अब भी पाक है। वह तमाम जहान से निराला है और अपने निराले पन में सब चीज़ों से नज़दीक और बन्दे की शहरगे गर्दन से ज़्यादा क़रीब, न वह क़ुर्ब जिसमें मसाफ़त को दखल हो, वह सब चीज़ों को घेरे हुए है, न ऐसा घेरना कि वह अशया उसके अन्दर हों और अल्लाह उनके बाहर, बल्कि वह घेरना जो अक्ल में नहीं आता वह ओला अअ्ला है, अ़र्शे अज़ीम पर फ़ौक़ियत वाला, न वह फ़ौक़ियत जिसके सबब अ़र्श के पास हो और ज़मीन से दूर, बल्कि उसके हुज़ूर अ़र्श, ज़मीन, ऊँचा, नीचा, अगला, पिछला सब एक सा पास है।

वह सबसे निराला पाक है वह बड़ी पाकी वाला बादशाह है, बे वज़ीर ख़ल्लाक़ है, बे नज़ीर ज़िन्दा है, बे फ़ना क़ादिर है, बे इज्ज़ न उसे ऊंघ आए न नीन्द। अ़र्श, कुर्सी, आसमान, ज़मीन सब को थामे हुए है, न यह थामना जो अक्ल में आए। न देने से उसका मुल्क घटे, न रोकने से बढ़े। अगर ज़र्रा ज़र्रा, पत्ता पत्ता आलम का एक आन में अपनी तमाम मुरादें जहाँ तक उनका गुमान पहुँचे, उससे तलब करें और वह सब मुरादें बर लाए और उनसे करोड़ों करोड़ हिस्से ज़्यादा अता करे, उसके ख़ज़ाने में एक ज़र्रा कम न हो और किसी को कुछ न दे तो एक शम्मा बढ़ न जाए, किसी की इताअत की उसे परवाह न मासियत से नुक़सान, ईमान व इबादत पर अपने फ़ज़्ल से सवाब देगा और उस पर कोई काम वाजिब नहीं होता। कुफ़्र व मासियत पर अज़ाब करेगा और वह किसी पर ज़ुल्म नहीं करता, उसके अद्ल को बन्दों के अद्ल पर क़यास नहीं कर सकते कि बन्दों से ज़ुल्म मुतसव्वर है और उससे हरगिज़ माक़ूल नहीं कि ज़ुल्म तो वह है कि ग़ैर के मिल्क में बेजा तसर्रुफ़ किया जाए और अल्लाह जो कुछ करे अपने मिल्क में करता है, दूसरा किसी चीज़ का मालिक हो ही नहीं सकता।

इताअत पर राज़ी होता है और मासियत पर ग़ज़ब फ़रमाता है। न वह रज़ा व ग़ज़ब जिसे हम रज़ा व ग़ज़ब समझते हैं कि कोई कैफ़ियत ताज़ा पैदा हो जो पहले न थी, या रज़ा में कोई आराम व लज़्ज़त या ग़ज़ब में कुछ तकलीफ़ व हरारत निकले। आलम अपने इख़्तियार से बनाया, चाहता तो न बनाता और उस न बनाने से उसकी खुदाई में कुछ नुक़सान न आता। उसे कुछ बनाने से फ़ायदा था न बे बनाए नुक़सान, अब जो बनाया तो

बनाने में कोई उसका शरीक या राए का बताने वाला न था, उसे राए व फ़िक्र की हाजत, न उसके फ़ेअल के लिये कोई मूजिब व इल्लत, मगर कोई काम उसका फ़ायदा व हिकमत से खाली नहीं, बेकार कोई चीज उसने न बनाई। न उसके कामों की सब हिकमतें अक्ल में आ सकें, जो चाहा सो किया, जो चाहेगा सो करेगा, उसके फ़ेअल पर कोई एतिराज़ करने वाला, न उसके हुक्म का कोई फेरने वाला, ग़रज़ उसके मुआमले में अक्ल के पर जलते हैं और वहमो ख़याल गर्दन झुकाकर निकलते हैं। सब बातों का खुलासा यह है कि जो कुछ अक्ल में आता है खुदा नहीं और जो खुदा है उस तक अक्ल रसा नहीं। पाकी उसे, जो सब ऐबों से पाक है।

अल्लाह तआला की सिफ़्तें

अल्लाह तआला जिस तरह तमाम ऐबों और कम मिक्दार बातों से जो उसकी बड़ाई के लायक नहीं पाक है। यूं ही सारी खूबियों और नफ़ीस कमालों से जो उसकी बुजुर्गी के सज़ावार है, मौसूफ़ है और जैसे वह हमेशा से है और हमेशा रहेगा, यूँ ही उसकी सिफ़तें भी हमेशा से हैं और हमेशा रहेंगी और उनमें भी कमी ज़ियादती, तग़य्युर, तबद्दुल को राह नहीं, न उनमें कोई नई बात पैदा हो, न वह किसी की बनाई हुई, न वह ख़ुदा की ऐन, न खुदा से कभी जुदा हो सके, न अक्ल व गुमान में समाएं, न मखूलक की सिफ़तों से मुनासिबत रखें, जैसे वह पाक है यूं ही उसकी सीफ़तें भी सब नुक़सान व ऐब से पाक हैं। इनमें से एक सिफ़त हयात है कि अल्लाह तआला हमेशा से ज़िन्दा है और हमेशा ज़िन्दा रहेगा, सब लोग उसके ज़िन्दा किये हुए हैं और वह आप ज़िन्दा है, सबकी जिन्दगी फ़ानी उसकी बाक़ी, सब की नाक़िस, उसकी कामिल, उसकी ज़िन्दगी रूह या सांस पर नहीं, उस पर कोई कमाल उसके ग़ैर पर मौक़ूफ़ नहीं, जैसे वह आप ही आप मौजूद है यूं ही उसकी सिफ़तें भी आप ही आप उसके लिये साबित हैं।

दूसरी सिफ़त : इल्म कि हमारा मालिक सब चीज़ों, कुल्ली, जुज़इ की खूब तफ़सील जानता है। क्या वह न जाने जिसने बनाया, और वही है पाक खबरदार। तहतुस्सुरा के नीचे से अर्श आला के ऊपर तक, कोई ज़र्रा किसी वक़्त उसके इल्म से ग़ायब नहीं, दिलों में जो खतरे गुज़रते हैं उन पर आगाह है, आलम में जो कुछ हुआ और अबद तक जो कुछ होगा, सबको अज़ल में जानता था और जानता है और हमेशा जानेगा। न वह बहके न भूले, जहान न था फिर बना फिर फ़ना होगा। बे शुमार पैदा होते हैं बे शुमार

मरते हैं, पेड़ फूलते हैं मुरझाते हैं, ज़र्रे चमकते हैं छुप जाते हैं, पत्ते हिलते हैं टूटते हैं, गिरते हैं, फिर नए निकल आते हैं, तरह तरह की तब्दीलियाँ जहांन में होती हैं और उसके इल्म में कुछ तग़य्युर नहीं। यही वजह है कि वह कोई काम करके पछताने से पाक है, पछताए तो वह जिसे पहले से अन्जाम का हाल न मालूम हो, जो ऐसा गुमान करता है बे ईमान काफ़िर है।

तीसरी सिफ़त : कुदरत, कि वह हर चीज़ मुमकिन पर क़ादिर है, जो चाहे कर सकता है, उसकी कुदरत किसी आलह और हथियार पर मौक़ूफ़ नहीं, तमाम कारख़ाना जहान का एक ज़र्रा सा जलवा उसकी कुदरत का है, एक इशारे में सब बना दिया फिर एक दम में मिटा देगा, फिर एक दम में सब मौजूद कर देगा और यह काम उस पर कुछ दुश्वार नहीं गुज़रते, न वह कभी थकता है। अपनी कुदरत से आग में गर्मी रखी पानी में सर्दी, आँख को देखना सिखाया कान को सुनना, वह चाहे तो पानी से जलादे और आग से प्यास बुझा दे, आँखें सुनने लगें कान बातें करें।

चौथी सिफ़त : इरादा कि आलम में जो कुछ हुआ और जो कुछ होता है और जो होगा बे उसके इरादा के नहीं। इरादा उसकी सिफ़ते क़दीम है उसकी ज़ात से क़ायम, मगर तअल्लुक़ उसका इन चीज़ों के साथ वक़्त वक़्त पर होता है, जिस चीज़ से वह इरादए क़दीम मुतअल्लिक़ हुआ मौजूद हो गई, जो चाहा वह हुआ, जो न चाहा न हुआ। आलम का छोटा बड़ा, भला बुरा, कम ज़्यादा, नफ़ा व नुक़सान, कुफ़्र व ईमान, ताअत व इस्यान जो कुछ होता है सब उसके इरादे से होता है। खयाल करो जहान में एक आन में किस क़दर काम होते हैं, किस क़दर पत्तियाँ हिलती हैं, कितनी हवाएं चलती हैं, जानदार सांसें लेते हैं, पलकें झपकती हैं, नबज़ें जुम्बिश करती हैं, चलने वालों के पाँव, काम करने वालों के हाथ, देखने वालों की निगाहें हरकत करती हैं, उनमें से किसी काम का शुमार ख़ुदा के सिवा कोई नहीं करता, फिर उन सब कामों पर एक एक करके वही हुक्म देता है, एक काम उसे दूसरे काम से ग़ाफ़िल नहीं करता। आदमी, फ़रिश्ते, जिन्न बल्कि सारा जहां इकट्ठा होकर एक ज़र्रे को जुम्बिश देना चाहे और उसका इरादा न हो, हरगिज़ हिला न सके। और उसका इरादा इस मअना कर नहीं कि किसी चीज की तरफ़ रग़बत व ख़्वाहिश पैदा हो बल्कि वह उसकी एक सिफ़त है जिसके तअल्लुक़ से चीज़ें अदम से वजूद में आती हैं।

पाँचवीं सिफ़त : समअ यानी सुनना कि आलम में एक वक़्त में फ़रिश्तों, आदमियों, जिन्नों, जानवरों की मुख़्तलिफ़ आवाज़ें रंग रंग की

बोलियां होती हैं, पत्ते खड़खड़ाते हैं, लोहे, पत्थर, बरतन खड़कते हैं, तरह तरह बाजे बजते हैं, घोड़ों की सुमों, आदमियों, जानवरों के पाँव से हलचल पैदा होती है, लिखने में क़ल्मों, खोलने बन्द करने में दरवाज़ों से आवाज़ निकलती है, वह एक आन में इन सब सदाओं को अलग अलग सुनता है और एक का सुनना उसे दूसरी के सुनने से नहीं रोकता।

छटी सिफ़त : बसर यानी देखना कि कैसी ही बारीक चीज़, कैसी ही तारीक जगह में हो उसे वैसा ही देख रहा है जैसे पहाड़ों को आफ़ताब की रोशनी में। मौजूदाते आलम उसके देखने में एक दूसरे की आड़ नहीं हो सकते, स्याह च्यूंटी जो अन्धेरी रात में हज़ारों ज़ुल्मतों में पहाड़ों की खोह में, या दरियाओं की तह में आहिस्ता चलती है, उसे देख रहा है और उसकी हलचल सुन रहा है और अपने देखने सुनने में आँख, ढेले, पुतली, निगाह, कान, सूराख वग़ैरहा तमाम आलात से पाक है। बे आँख देखता है और बे कान सुनता है जैसे बे दिल के जानता है और बे पन्जा उंगलियों के काम करता है। कुरआनो हदीस में जो यद, ऐन, वजह, साक़ वग़ैरह खुदा के लिये वारिद हुई वह सब उसकी सिफ़तें हैं हम उनकी कुन्ह नहीं जानते। जिस्म से पाक है और मुशाबहते मख़लूक से जुदा।

सातवीं सिफ़त : कलाम कि वह भी सिफ़ते क़दीम है, उसकी ज़ात से क़ायम और आला ज़बान व दहान से मुनज़्ज़ह, न वहाँ आवाज़ है कि न सिर्फ़ ज़बान रोकने या लब बन्द करने से खत्म हो जाए, या अलहम्द आमीन अलिफ़ पहले कह ले जब लाम पर पहुँचने पाए, बल्कि जैसे वह अक़्ल में नहीं आता उसका कोई वस्फ़ भी खयाल में नहीं समाता, इसी लिये उसे किसी वक़्त खामोश नहीं रख सकते, न उसके कलाम में माज़ी हाल इस्तिक़बाल निकले कि वहाँ ज़माने को तो दखल ही नहीं। मूसा अलैहिस्सलाम ने जो उसका कलाम सुना वह यही कलाम था जो ज़बान व हर्फ़ व आवाज़ व तक़दीम व ताखीर से पाक है। कुरआने मजीद ज़बानों से पढ़ा जाता है, दिलों में याद रखा जाता है, काग़ज़ों में लिखा जाता है, बा वुजूद इसके वह जो उसका कलाम क़दीम है उसकी ज़ात से क़ायम और उससे जुदा नहीं हो सकता और उससे छूट कर दिल या वर्क़ या ज़बान में नहीं आ सकता। यह मस्अला भी ऐसा नहीं कि अक़्ल में आ सके या इसकी शरह कोई तहरीर में ला सके। जिस क़दर बता दिया गया उस पर ईमान लाना चाहिये।

तक़्दीरे इलाही का मस्अला

अल्लाह तआला ने बन्दे बनाए और अपने फ़ज़्ल व अद्ल से उनकी दो क़िस्में कर दीं, एक मुट्ठी ली कि यह जन्नत में है और मुझे कुछ परवाह नहीं, दूसरी मुट्ठी ली कि यह दोजख में है और मुझे कुछ परवाह नहीं। जो किया हक़ किया। मालिको मुख़तार से कोई क्या पूछे, क्यों किया, कैसे किया, किस लिये किया। आलम में जो कुछ हुआ और अबद तक होगा सब उसने अपने इल्म के मुताबिक़ लिख दिया था। भलाई बुराई सब उसके इरादे से होती है, मगर वह भलाई पर राज़ी और बुराई से नाराज। अगर उसका इरादा इताअत ही का होता और वह न चाहता कि कोई कुफ्र या गुनाह करे तो क्या ज़बरदस्ती उसकी नाफ़रमानी कर सकता था। रहा यह कि फिर ना फ़रमानी पर अज़ाब क्यों करता है ?

उसका मुख़्तसर जवाब यह है कि खुदा ने तुझे इस तरह बनाया जैसा उसने चाहा, या वैसा जैसा तू चाहता था। ज़रूर कहेगा कि मेरा क्या दखल था, वैसा ही बनाया जैसा उसने चाहा। जब यह है तो फिर तुझ से काम वैसे ही लेगा जैसे वह चाहेगा और तेरे साथ वही करेगा जो वह चाहेगा, तुझे उसमें भी कुछ दखल नहीं। वह जिस तरह बन्दों का ख़ालिक़ है यूँ ही उनके काम भी उसी की मखलूक़ हैं। वही राह दिखाए, वही गुमराह करे, गुमराह पर उसकी गुमराही में एतराज़ है और अल्लाह पर कुछ एतराज़ नहीं। बन्दे तेरे मजबूर भी नहीं बल्कि एक तरह का इख़्तियार उसी का दिया हुआ है जिससे नेकी बदी करते और सवाब व अज़ाब पाते हैं। इतना हमें ख़ूब मालूम है कि हम में और पत्थर में फ़र्क़ जाहिर है। इस मस्अले में बहस करने से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने मना फ़रमाया। ईमान अपना दुरुस्त करे और जो शरअ़ ने बताया माने।

अल्लाह तआला की किताबें

अल्लाह तआला ने अपने बन्दों को राह दिखाने के लिये खास मक़बूलों पर अपना कलाम उतारा, उन में से तौरैत मूसा अलैहिस्सलाम पर, ज़ुबूर दाऊद अलैहिसस्लाम पर, इन्जील ईसा अलैहिस्सलाम पर, क़ुरआन मोहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम पर, जो कुछ उसने फ़रमाया सब हक़ है, उसके कलाम में हम अपने अक़ल को दखल नहीं देते, जिस क़दर समझ में आता है उसे समझ कर मानते हैं और जो फ़हम से वरा है उसे बे चूनो चिरा हक जानते हैं, मगर तौरैत व इन्जील में यहूदो नसारा ने

बहुत तहरीफ़ें कर दीं, जा बजा घटा बढ़ा दिया और कुरआने मजीद का अल्लाह निगेहबान, कोई उसका एक नुक़्ता नहीं बदल सकता।

कुरआन में अर्श व आसमान, जिन्न व शैतान, नार व जिनां वग़ैरह जिन जिन चीजों का ज़िक्र है हम उन्हें उसी मअ़ना पर रखते हैं जो ज़ाहिर और अहले इस्लाम में मशहूर हैं, उनमें फेर फार और बनावट करना और आसमान को ब मअ़ना बलन्दी, शैतान को बमअ़ना कुव्वते बदी, दोज़ख व जन्नत को ब मअ़ना अलम व लज़्ज़त लेना कुफ्र है। इसी तरह जो तफ़सीरें कुरआन की रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम और उनके अस्हाब से मनकूल हुई, हम उन्हीं का एतिबार करते हैं, अपनी तरफ़ से आयतों के मअ़ना बदलना हराम समझते हैं, हमारा कलाम जैसे हमारे इरादे से होता है, अल्लाह का कलाम उसके इरादा या उसके या किसी और के बनाने से पैदा नहीं होता वह तो उसकी ज़ाती सिफ़ते क़दीम हैं।

अल्लाह तआला के फ़रिश्ते

फ़रिश्ते खुदा की मखलूक हैं नूर से बनाए हुए, न मर्द हैं न औरत, उनकी पैदाइश बस खुदा के हुक्म से है न खाते हैं न पीते, उनकी ग़िज़ा खुदा की याद है; वह सब मासूम हैं, अल्लाह की नाफ़रमानी उनसे नहीं हो सकती, न वह काम करने में थकें, अल्लाह ने उन्हें तरह तरह के कामों पर मुक़र्रर किया है बग़ैर उसके कि खुदा को उनसे काम लेने की कोई हाजत हो, उन में चार फ़रिश्ते बहुत मुकर्रब है : जिब्राईल अलैहिस्सलाम कि पैग़म्बरों पर वही लाते और फ़तह व शिकस्त उनके सुपुर्द है, मीकाईल अलैहिस्सलाम कि रिज़्क बांटने पर मुक़र्रर हैं, इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम कि रोज़े क़ियामत सूर फूकेंगे, इज़्राईल अलैहिस्सलाम कि बन्दों की जानें क़ब्ज़ करते हैं, पैग़म्बरों के बाद उनके रुत्बे को कोई नहीं पहुँचता।

इनके सिवा और बेशुमार मलाइका हैं जिनकी गिनती खुदा ही जाने। किरामन कातेबीन आदमियों के साथ हैं नेकी बदी लिखने को, और कुछ फ़रिश्ते हैं बलाओं से बचाने को, जब तक खुदा का हुक्म रहे। मुनकर नकीर क़ब्र में सवाल करने के लिये हैं, रिज़वान जन्नत के ख़ाज़िन और मालिक दोज़ख के दारोग़ा। सब फ़रिश्तों पर ईमान लाना और उनकी ताज़ीम व तौक़ीर करना फ़र्ज़ और उनकी जनाब में गुस्ताखी कुफ्र। जैसे बाज़ लोग हज़रत इज़्राईल अलैहिस्सलाम को बुरा कहने लगते हैं या बाज़ बे बाक हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम से इमामों का या मौला अली का रुत्बा

बढ़ाते हैं और जिब्रईल को उनका शागिर्द बताते हैं या ज़ुलफ़िकार की तारीफ़ में कहते हैं इससे जिब्रईल के पर कट गए, यह सब बातें शैतनत व गुमराही की हैं अल्लाह बचाए।

अल्लाह तआला के पैग़म्बर अलैहिमुस्सलाम

अल्लाह तआला ने अपने बन्दों की हिदायत के लिये अपने प्यारे बन्दों को चुना और अपना नबी व रसूल किया, उन्हें ख़ुदा का हुक्म वही से पहुँचता और वह बन्दों को पहुँचाते, यह मरतबा किसी को कस्ब व रियाज़त से न मिला, ख़ुदा की देन थी जिसे चाहा दिया। फिर उनमें बाज़ ऐसे हुए जिन पर अल्लाह की किताबें भी उतरीं, वह रसूल कहलाए। अम्बिया की गिनती मुअय्यन करना न चाहिये, यूँ कहे कि हम ख़ुदा के सब नबियों पर ईमान लाए।

पैग़म्बर सब मासूम होते हैं, अल्लाह ने उनकी पाक तबीअतों, सुथरी तीनतों में ऐसा माद्दा रखा है कि गुनाह उनके पास होकर नहीं निकलता और शैतान का हरगिज़ उन पर काबू नहीं चलता। और उनकी इस्मत फ़रिश्तों की इस्मत से बेहतर है कि फ़रिश्ते तो ख़ुदा की फ़रमांबरदारी में मजबूर हैं, उनमें गुनाह की ताक़त ही नहीं और अम्बिया चाहते तो गुनाह कर सकते मगर उनके दिल ख़ुदा की याद में ऐसे डूब गए कि गुनाह का ख़याल भी नहीं गुज़रता। अम्बिया व मलाइका के सिवा जहान में और कोई मासूम नहीं, न सहाबा, न अहले बैत, न औलिया, न कोई, अगरचेह अल्लाह की इनायत बाज़ बन्दों पर रहती है कि वह गुनाह नहीं करते और वह शैतान की तरफ़ से ख़ूब होशियार रहते हैं मगर इस्मत जिसका नाम है वह नौए बशर में अम्बिया ही के लिये ख़ास है वह सब छोटे बड़े गुनाहों से पाक हैं और शरीअत के पहुँचाने में उन पर भूल चूक भी रवा नहीं।

वह सब अल्लाह के निहायत महबूब व मक़बूल बन्दे हैं, कोई मख़लूक़ ख़ुदा की यहाँ तक कि मुक़र्रब फ़रिश्ते भी उनके दर्जे को नहीं पहुँचते, अल्लाह से जो नज़दीकी और उसकी बारगाह में जो इज़्ज़त पैग़म्बरों को है किसी को नहीं। और जिस क़दर ख़ुदा को प्यारे हैं कोई नहीं। फिर जो कोई किसी वली या सहाबी या इमाम को पैग़म्बरों से बेहतर बताए, काफ़िर है। किसी पैग़म्बर की शान में अदना गुस्ताख़ी कुफ़्र। जो कुछ वह ख़ुदा के पास से लाए सब हक़ है, हम सब पर ईमान लाए।

सबसे पहले नबी आदम अलैहिस्सलाम हुए जो आदमियों के बाप हैं

और सबसे पिछले हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम जो सब अम्बिया के स रदार हैं। हमारे हुज़ूर के बाद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का मरतबा सबसे बड़ा है, इनके बाद नूह व मूसा व ईसा अलैहिमुस्सलाम, कि यह पाँचों हज़रात उलुल अज़्म कहलाते हैं, इनके सिवा इद्रीस व लूत व इस्माईल व इस्हाक़ व याक़ूब व यूसुफ़ व हूद व हारून व सुलैमान व दाऊद व ज़करिया व यहया व शोएब वल यसअ व ज़ुलकिफ़्ल व सालेह व यूनुस व इल्यास व अय्यूब अलैहिमुस्सलाम वग़ैरहुम। लाख से कई हज़ार ज़्यादा पैग़म्बर हुए, औरत कोई पैग़म्बर न हुई, न जिन्नों में नबी हुआ। नुबुव्वत बाद मौत के छिन नहीं जाती, वह सब अब भी नबी हैं जैसे जब थे, वह बस एक आन को मरते हैं फिर उनकी रूहें बदन में लौट आती हैं और जैसे दुनिया में ज़िन्दा थे उससे बेहतर ज़िन्दगी पाते हैं, अपनी क़ब्रों में नमाज़ें पढ़ते हैं, रिज़्क़ दिये जाते हैं, ज़मीन पर उनका बदन खाना हराम है, अल्लाह ने उन्हें इख़्तियार दिया है कि क़ब्रों से निकल कर जहां चाहते हैं जाते हैं, आलम में तसर्रुफ़ फ़रमाते हैं।

कुरआने मजीद में शहीदों को ज़िन्दा बताया और उन्हें मुर्दा कहने से मनअ फ़रमाया, फिर उनसे और पैग़म्बरों से क्या निस्बत, पैग़म्बरों की ज़िन्दगी उनसे भी बेहतर है। अल्लाह तआला ने ईसा अलैहिस्सलाम को कुंवारी औरत सुथरी बतूल मरयम के पेट से बिन बाप के पैदा किया वह और नबियों की तरह अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं, अल्लाह ने उन्हें ज़िन्दा आसमान पर उठा लिया, न वह क़त्ल हुए न सूली दी गई, क़ियामत के क़रीब उतरेंगे और हमारे नबी की उम्मत में दाख़िल होकर उनके दीन को रिवाज देंगे। अल्लाह के बे शुमार दुरूदें उसके सब पैग़म्बरों पर।

हमारे नबी मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

हमारे पैग़म्बर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम का नूर तमाम जहान से पहले बना और सब अम्बिया के बाद ज़ुहूर हुआ, हुज़ूर के बाद दुनिया के पर्दे पर ख़ुदा की मख़लूक़ में कहीं कोई नबी नहीं हो सकता, अल्लाह तआला ने उन्हें ख़ातमुन्नबिय्यीन फ़रमाया और उसके यही मअना हैं कि सब नबियों के पिछले, जो इसका इनकार करे और ख़ातेमुन्नबिय्यीन के मअना बदले बेशक काफ़िर है। अगले पयम्बर अपनी अपनी क़ौम की तरफ़ भेजे जाते, हमारे मौला तमाम मख़लूक़े ख़ुदा के नबी हुए, अगली पिछली, मरी जीती, इब्तिदाए मख़लूक़ात से क़ियामत, सब

को हुजूर की नुबुव्वत शामिल, यहाँ तक कि अम्बिया भी उनकी उम्मत में दाखिल, पैग़म्बरों को खुदा ने इसी इक़रार पर नुबुव्वत दी कि अगर तुम अहमद का ज़माना पाना तो उसकी मदद करना और उस पर ईमान लाना। सब पयम्बर अपनी उम्मतों को हमारे नबी के आने की बशारत देते रहे और उनकी खूबियाँ बयान करते और अपनी मजलिसों में उनकी याद से ज़ीनत बढ़ाते और उसे रज़ा मन्दिये खुदा का सबब जानते।

अल्लाह के खज़ानए क़ुदरत में जिस क़दर खूबियाँ थीं सब हमारे नबी को अता हुई। तमाम अम्बिया व मलाइका पर बुज़ुर्गी मिली, कोई उनके रुत्बे तक नहीं पहुँच सकता, उनका हम सर जहाँ में हुआ न हो, जो कहे आलम में कोई पयम्बर या फ़रिश्ता मरतबे में उनसे बेहतर या उनके बराबर था या है या होगा, काफ़िरे मुतलक़ है, जितने कमाल सब पयम्बरों को मिले वह सब और उनसे हज़ारो हिस्सा ज़्यादा हमारे नबी को अता हुए, हमारे नबी के बराबर खुदा को कोई प्यारा नहीं, उन्हीं के लिये जहांन को बनाया और दुनिया व आखिरत का कारखाना फैलाया, वह न होते तो कुछ भी न होता और उनकी याद बे ऐनेही खुदा की याद है, जो उनकी याद से मुंह फेरे जहन्नम में जाए, मुसलमानों को उनका ज़िक्र सुनाना इबादत और दोनों जहान की सआदत।

मेअ़राज को उसी जिस्म के साथ गए, आसमानों की सेर की, जन्नत व दोज़ख मुलाहज़ा फ़रमाए, सातों आसमानों से परे तशरीफ़ ले गए, यहाँ तक कि वहाँ पहुँचे जहाँ किसी नबी या फ़रिश्ते की रसाई नहीं, दीदारे खुदा आँखों से देखा, कलामे इलाही खुद सुना, बीच में कोई पयामी न था, बे शुमार नेअ़मतों से खुदा ने नवाज़ा, थोड़ी देर में दौलत खाने को वापस आए और हज़ारहा बरस की राह क़तअ़ कर आए।

अल्लाह की बारगाह से उन्हें गुनाहगारों की शफ़ाअत का इज़्न मिल गया, दुनिया में भी शफ़ाअत करते थे, क़ब्र में भी शफ़ाअत करते हैं, क़ियामत के दिन किसी नबी या फ़रिश्ता की मजाल न होगी कि अल्लाह के यहाँ सिफ़ारिश करे, वही शफ़ाअत का दरवाज़ा खोलेंगे और उनकी शफ़ाअत से बे शुमार गुनाहगार बख्शे जाऐंगे, अगरचेह कुफ़्र के सिवा कैसे ही बड़े गुनाहों में उम्र गुज़ारी हो और बे तौबह मर गए हों। और उन्हें मरतबा-ए-शफ़ाअत इसी सबब से मिला कि खुदा के यहाँ उनकी इज़्ज़त सबसे बड़ी है और वह सबसे ज़्यादा खुदा को प्यारे हैं, इसका मुनकिर पक्का बद दीन है।

जो कोई उनकी शान में अदना गुस्ताखी करे या तहक़ीर की निगाह से

उनके नाखुनों को बढ़ा हुआ या कपड़ों को मैला बताए, फ़ौरन ईमान जाता रहे। उनकी इज़्ज़त खुदा की बारगाह में बिला शुबह ऐसी है जैसी बादशाह के दरबार में वज़ीरे आज़म की होती है। उससे घटाकर जो चपरासी या खानसामां या किसी और नीचे मन्सब से निस्बत दे, अपने ईमान से हाथ धो बैठे। उनकी शरीअत सब शरीअतों और उनकी उम्मत सब उम्मतों से बेहतर है। अगली सब शरीअतें उनकी शरअ ने मन्सूख कर दीं यानी उनका हुक्म खत्म हो गया और अब यह शरीअत जारी हुई जो क़ियामत तक रहेगी। ईमान के यह मअना हैं कि उन्हें अपनी जान और मां बाप और बाल बच्चों सबसे ज़्यादा चाहे। अगर ज़बान से कलमा पढ़ता है और नमाज़ व रोज़ा खूब बजा लाता है और हमारे प्यारे नबी से महब्बत नहीं रखता, बेशक काफ़िर है।

अल्लाह ने उनके हाथ पर मोअजिज़े ज़ाहिर फ़रमाए, चाँद उनके इशारे से दो टुकड़े हो गया और उसका शक होना उन्हीं का मोअजिज़ा था, उसमें कलाम करने वाला सरीह बहका हुआ है। अल्लाह ने उन्हें ज़ाहिर और छुपी बातों पर इत्तिला दी, आलम में जो कुछ हुआ और जो होने वाला है सब बता दिया, उन्हें अपनी बारगाह का पूरा नाइब व मुख्तार किया, सारे जहान में उनका हुक्म जारी, खुदा के फ़रिश्ते उनके ताबेअ फ़रमान, दुनिया व दीन में जो जिसे मिलता है उनकी सरकार से मिलता है। खज़ानों का मालिक खुदा और उसके हुक्म से बांटने वाले मुस्तफ़ा। (सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम)। आप जो चाहते हैं खुदा वही चाहता है कि यह वही चाहते हैं जो खुदा चाहता है, उनकी मौत बस क़सम खाने को थी, हमारी निगाहों से छुप गए, क़ब्र शरीफ़ में अगली ज़िन्दगी से बेहतर ज़िन्दा हैं हमारा दुरूदो सलाम उन्हें पहुँचता है वह जवाब देते हैं, हमारे अअमाल उनके हुज़ूर पेश किये जाते हैं, वह नेकियों पर खुश होते हैं और बुराइयों पर इस्तिग़फ़ार फ़रमाते हैं।

जो उन्हें मुर्दा समझे उस बदबख्त का दिल मुर्दा है। जो कहे वह मरकर मिट्टी में मिल गए वह मरदूद दोज़ख का कुन्दा है। उन्हें मुश्किलों में पुकारना और उनसे मदद मांगना बेशक जाइज़ है, उनके वसीले के बग़ैर कोई नेअमत नहीं मिलती, अल्लाह तआला ने उन्हें यह भी ताक़त दी है कि जो उनसे मदद मांगे उसकी मदद करें और जो उन्हें आफ़त में पुकारे उसकी मुसीबत टाल दें और हम जो उन्हें यहाँ से पुकारते हैं तो अजब नहीं कि फ़रिश्ते हमारी अर्ज़ उन तक पहुँचाएं जैसे दुरूदो सलाम पहुँचाते हैं या हुज़ूर खुद सुन लें जैसे पाँच सौ बरस की राह से आसमान के दरवाज़ा खुलने की

आवाज़ सुन ली और फ़रिश्तों के बोझ से जो आसमान चिर चिराता है, उसकी आवाज़ सुनते हैं। इसी तरह उनके सदक़े में उम्मत के बाज़ औलिया को भी यह मन्सब मिला, खुसूसन हज़रत मौला अली व हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा।

मगर मदद यूँ समझ कर मांगे कि मुस्तक़िल हाजत का रवा करने वाला एक अल्लाह है, जिसका कोई शरीक नहीं, मालिक वही है और यह उसके प्यारे, उसके हुक्म से बांटने वाले, उसकी सरकार के मुख़्तार बन्दे, उन्हें खुदा ने क़ुदरत दी और अपनी रहमत के खज़ानों पर दस्तरस बख़्शी, यह अपनी तरफ़ से एक ज़र्रा लेने देने की ताक़त नहीं रखते। मैं हक़ीक़त में खुदा से मांगता हूँ और इन्हें बीच में वसीला करता हूँ और जो कहीं यह ख़याल किया कि किसी मखलूक़ को अपनी ज़ात से एक शम्मा क़ुदरत है उसी वक़्त ईमान जाता रहेगा। नबी हो या वली, सब अल्लाह के बन्दे और उसके मोहताज, वही जानते हैं जो ख़ुदा बता दे और वही कर सकते हैं जो ख़ुदा करा दे। उसने अपने फ़ज़्ल से इन्हें बड़े बड़े इल्म, भारी भारी क़ुदरतें दीं, वह बन्दें है मगर मालिक के प्यारे और आदमी हैं मगर न हम जैसे। फिर उनमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम की शान तो कहना ही क्या है, खुदा के बाद उनकी अज़मत है। गोया वह ज़ाते पाक बिल्कुल ज़ाते इलाही का आइना है।

इन के रोज़ए पाक की ज़ियारत दो जहाँ की सआदत और अपने तईं उससे महरूम रखना कामिल ईमान दार का काम नहीं, मुसलमान को उसमें ज़रूर एहतिमाम चाहिये और खास इस निय्यत से कि हुज़ूर के रोज़ए पाक की ज़ियारत करेंगे, मदीना शरीफ़ा को हज़ारों मन्ज़िल से सफ़र करना बेशक जाइज़ और बे हद बरकतों का मूजिब। इसी तरह मज़ारात औलिया के लिये भी सफ़र रवा है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम के सबब उनकी औलाद और उनके दीन के उलमा और उनके शहर मक्का व मदीना की भी ताज़ीम फ़र्ज़ है। वहाँ के रहने वालों को हुज़ूर का हमसाया जानकर बड़ी तौक़ीर करे। इसी तरह जो चीज़ हुज़ूर की तरफ़ मन्सूब हो, मूए शरीफ़ या जुब्बा शरीफ़ या क़दम शरीफ़ या जो कुछ हो उसकी ताज़ीम मुसलमानों पर ज़रूर, और यह खयालात दिल में लाना कि इन चीज़ों का असली होना हमें कैसे मालूम हो, शैतानी खयाल है। अगर अस्ल में वह चीज़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम की हुई और तुमने ताज़ीम न की तो बड़े गुनाहगार हुए और न हुई तो तुम अपनी

नियत पर सवाब पाओगे। हां जो कोई तस्वीर हुजूर की बताए तो उसकी जियारत न चाहिये कि वहाँ न ताजीम करते बन पड़ेगी न बे ताज़ीमी, और दिल को यूँ समझा ले कि अगर यह तस्वीर सही नहीं तो देखने की क्या ज़रूरत और सही है तो देखने के क़ाबिल आँखें कहां से लाऊँ। अल्लाह दुनिया व आखिरत में उनके दीदार से महरूम न करे। आमीन।

हुज़ूर के आल व अस्हाब

पैग़म्बरों के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम के सहाबा का दर्जा है। उम्मत का कोई वली कैसे ही बड़े रुत्बे का हो किसी सहाबी के मरतबे को नहीं पहुँचता। खुदा की दरगाह में जो नजदीकी व इज्ज़त उन्हें हासिल, उम्मत में दूसरे को नहीं। उन सब की ताज़ीम फर्ज और उनकी शान में गुस्ताखी गुमराही। उनकी महब्बत ईमान की अलामत और उनमें किसी से दिल कशीदा रखना निफ़ाक की निशानी। वह सब के सब अल्लाह के बड़े महबूब और निहायत नेक बन्दे। खुदा से बड़े डरने वाले थे। ईमान उनके दिलों में पहाड़ों से ज़्यादा मजबूत था। जो उनमें से किसी को फ़ासिक़ बताए आप फ़ासिक़, बद दीन है। अस्हाबे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम कई हज़ार ऊपर एक लाख थे, उनमें से हैं अबू बक्र सिद्दीक, हुज़ूर के यारे ग़ार और बड़े जां निसार, उनकी बेटी हज़रत आएशा सिद्दीक़ा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम की बड़ी प्यारी बीबी थीं, उमर फ़ारूक़े आज़म इनके साए से शैतान भागता, इनकी बेटी हफ़्सा भी हुज़ूर को ब्याही थीं और यह दोनों साहेब हमारे नबी के वज़ीर और हर काम में मुशीर थे। हुज़ूर के यहाँ इनकी बड़ी क़द्र थी।

उस्मान ग़नी इन्हें हुज़ूर की दो बेटियाँ, हज़रत बीबी रुक़य्या और हज़रत बीबी उम्मे कुलसूम ब्याही थीं। मौला अली हुज़ूर के चचा ज़ाद भाई थे इनके निकाह में हुज़ूर की सबसे ज़्यादा प्यारी बेटी हज़रत खातूने जन्नत बीबी फ़ातिमा ज़हरा थीं। यह चारों सहाबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम के ख़लीफ़ा थे। एक के बाद दूसरे हुज़ूर की जगह मस्नद पर बैठे और दीन के काम खूब जारी किये। हर एक खलीफ़ा बर हक़ था, उनमें कोई ज़ालिम और ग़ैर का हक़ छीनने वाला न था। जो ऐसा गुमान करे अपने ईमान का दुश्मन है और हज़रत ज़ुबैर कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम के फूफी ज़ाद भाई थे और हज़रत तल्हा और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और सअद बिन अबी वक़्क़ास, ज़ैद

और अबू उबैदह बिन अल जर्राह छः यह और चार वह, इन दसों को अशरए मुबश्शरह कहते हैं, इन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने एक साथ जन्नत की बशारत दी और यह दसों क़तई जन्नती हैं।

और इनके सिवा हुज़ूर की साहबज़ादी हज़रत बीबी ज़हरा और हुज़ूर के नवासे हज़रत इमाम हसन, हज़रत इमाम हुसैन और हुज़ूर की बीबियाँ हज़रत खदीजा व हज़रत आएशा और हुज़ूर के चचा हमज़ा व हज़रत अब्बास और इनके सिवा और सहाबा भी क़तई जन्नती हैं। और सहाबियों में हज़रत मुआविया और उनके बाप हज़रत अबू सुफ़यान भी थे और सुफ़यान की बेटी और मुआवियह की बहन जिनका नामे पाक हज़रत उम्मे हबीबा था, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम के निकाह में थीं, यह सब साहेब और बाक़ी तमाम सहाबा, सब बड़े रुत्बे वाले थे उनमें से किसी पर तअन करना अपने दीन की शामत लगाना है। हज़रत बीबी आएशा का दामन पाक, झूटों की बोहतान से बरी था, अल्लाह तआला कुरआन में उनके पाक सुथरे होने की गवाही देता है, फिर जो ऐसी तोहमत से अपनी ज़बान गन्दी करे काफ़िर है। हुज़ूर की सब बीबियाँ मुसलमानों की माएं हैं।

JANNATI KAUN?

सहाबा की शकर रंजियाँ

सहाबा की आपस में जो बाज़ शकर रंजियाँ हो गईं जैसे हज़रत मौला अली से जनाब अमीर मुआविया लड़े या हज़रत बीबी आएशा और हज़रत तलहा और हज़रत ज़ुबैर ने इनसे मुक़ाबला किया, यह सब रंजिशें दोनों तरफ़ से फ़क़त दीन की खैर ख्वाही में थीं, एक की नज़र में एक बात दीन के लिये ज़्यादा बेहतर मालूम हुई, दूसरे की राय में वह बात न मुनासिब ठहरी, इस पर झगड़ा हुआ। इन वाक़िआत में बेजा ग़ौर करना हराम है। हमारा क्या मुंह कि उनके मुआमले में दखल दें या खुदा की पनाह एक के पीछे दूसरे को बुरा कहने लगें। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं जो मेरे अस्हाब को बुरा कहेगा उस पर खुदा और फ़रिश्तों और आदमियों, सब की लअनत, खुदा उसका फ़र्ज़ क़ुबूल करे न नफ़्ल।

और फ़रमाते हैं खुदा से डरो! मेरे अस्हाब के हक़ में, उन्हें निशाना न बना लेना। मेरे बाद जो उनसे महब्बत रखता है मेरी महब्बत के सबब उनसे महब्ब रखता है और जो उनसे बैर रखता है मेरे बाइस उनसे बैर रखता है और जिसने उन्हें सताया उसने मुझे सताया और जिसने मुझे सताया

उसने ख़ुदा को सताया और जिसने ख़ुदा को सताया तो क़रीब है कि ख़ुदा उसे गिरफ़्ता करे। फिर मुसलमान से कैसे हो सके कि उनमें से किसी को बुरा कहे या उसकी महब्बत दिल में न रखे। हां इतना समझना ज़रूर है कि उन सब लड़ाइयों में हक़ हज़रत मौला अली की तरफ़ था और दूसरी तरफ़ वाले ख़ता व ग़लती पर, मगर न ऐसी ख़ता जिस पर उन्हें बुरा ठहराना रवा हो। क़ुरआन फ़रमा चुका है अल्लाह उनसे ख़ुश वह अल्लाह से ख़ुश, बस इसी पर ईमान रखना चाहिये।

तफ़ज़ील की तफ़सील

सहाबा तमाम उम्मत से अफ़ज़ल हैं और सहाबा में सबसे अफ़ज़ल और अल्लाह के नज़दीक रुत्बा और इज़्ज़त में सबसे ज़्यादा और ख़ुदा से बहुत नज़दीक हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ हैं, फिर उमर फ़ारूक़, फिर उस्माने ग़नी फिर मौला अली और अफ़ज़ल के यही मअ़ना हैं कि औरों से रुत्बे में बड़ा और ख़ुदा के यहाँ इज़्ज़तो वजाहत व सवाब व करामत में ज़्यादा हो। हम सुन्नी इन बातों में हज़रत सिद्दीक़े अकबर को अम्बिया व मुरसलीन के बाद तमाम जहान से बढ़कर मानते हैं। शीआ हज़रत मौला अली को। फिर हमारा गवाह क़ुरआनो हदीस, उनके लिये कोई गवाह नहीं। मगर सब ख़ूबियों और सब कमालात में एक को दूसरे पर ज़्यादती नहीं।

और मन्सबे विलायते मौला अली बाद शैख़ैन इस क़दर अअ़ला और अरफ़ा है कि बे तवस्सुत उनके कोई शख़्स दरजए विलायत और ग़ौसियत और क़ुतुबियत व अब्दालियत वग़ैरह को पहुँच नहीं सकता है, बाज़ नेअ़मतें हज़रत मौला अली को ऐसी मिलीं कि सिद्दीक़ और फ़ारूक़ में न थीं मगर क़ुरआनो हदीस से साबित कि मरतबा बड़ा सिद्दीक़ व फ़ारूक़ का है। मौला अली फ़रमाते हैं : जो सिद्दीक़ व फ़ारूक़ पर मुझे बढ़ाएगा , मुफ़तरी है मैं उसे अस्सी कोड़े मारूँगा। और इसी से ब ख़ूबी साबित हुआ कि अकसरियते सवाब इन्दल्लाह और क़ुरबे रब्बुल अरबाब और विलायत और मारेफ़त में भी सिद्दीक़ो फ़ारूक़ का मरतबा ज़्यादा है, इस वास्ते कि मिस्दाक़े अफ़ज़लियत कि मस्अला यक़ीनी, इज्माई है, बग़ैर इसके तस्लीम के मुमकिन नहीं है।

हां लोगों को दौलते विलायत और इरफ़ान बांटने और ख़ुदा तक पहुँचाने का मन्सब हज़रत मौला अली के लिये कुल सहाबा-ए-किराम से ज़ाइद है इसमें और जुज़ई ख़ूबियों में, मौला अली ज़्यादा हैं। यही मज़मून

शरअ से साबित और ऐसा ही सूफ़ियाए किराम का अक़ीदा। हजरत बीबी फ़ातिमा जन्नत की सब बीबियों और हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन जन्नत के सब जवानों के सरदार हैं। इनसे सच्ची महब्बत रखने वाला जन्नती और बुग़्ज़ रखने वाला जहन्नमी है। अल्लाह पनाह दे।

ईमान व कुफ़्र व शिर्क व बिदअत की बहस

ईमान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तस्दीक़ का नाम है और उन सब बातों में जो वह अल्लाह के पास से लाए और उनका दीन से होना ऐसा सरीह मशहूर हो कि किसी पर छुपा न रहे, ऐसी बातों को ज़रूरियाते दीन कहते हैं जैसे रोज़ा, नमाज़, हज, जकात की फ़र्ज़ियत, ज़िना, जुल्म, झूट, क़त्ले नाहक़ की हुरमत, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बड़ी अज़मत, हुज़ूर के ऊपर खत्मे नुबुव्वत, क़ुरआन, मौजूद का है, कमी ज़्यादती कलामे इलाही होना और इसके सिवा और बहुत अक़ीदे जिन के खिलाफ़ को हम ऊपर कुफ़्र लिख आए इसी क़िस्म की बातों से इनकार, या उनमें शक लाने से आदमी काफ़िर होता है। बाक़ी कैसा ही बड़ा गुनाह हो मुसलमान को ईमान से खारिज नहीं करता।

काफ़िर हमेशा दोज़ख में जलेंगे कभी उनका अज़ाब कम न हो और कबीरा गुनाह वाले अगरचेह बे तोबह मर गए हों, हमेशा न रहेंगे बल्कि अल्लाह चाहे तो अपनी रहमत या नबी की शफ़ाअत से बे अज़ाब बख्श दे या अव्वल आग में डालकर पाक कर ले फिर जन्नत भेजे। आखिर हर मुसलमान का बहिश्त में जाना और फिर कभी उससे न निकलना ज़रूर है। अल्लाह तआला कुफ़्र को नहीं बख्शता और उसके सिवा जो कुछ है जिसे चाहे मुआफ़ कर दे और चाहे तो छोटे छोटे गुनाहों पर अज़ाब करे। किसी कलमा गो को काफ़िर कह देने में बड़ी एहतियात चाहिये।

हम किसी खास शख्स का नाम लेकर लअनत नहीं करते, क्या मालूम शायद खातिमा ईमान पर हो। हां यूँ कहते हैं कि सब काफ़िरों पर खुदा की लअनत। या खास लअनत रवा है तो उन पर जिनका दुनिया से काफ़िर जाना यक़ीनी है जैसे इब्लीस, फ़िरऔन, क़ारून, हामान, नमरूद, अबू जहल, अबू लहब वग़ैरहुम लअना हुमुल्लाह। इसी लिये ठीक तहक़ीक़ बात यही है कि यज़ीद पलीद पर लअनत में सुकूत अन्सब है व अवला और असलम है और यही है मज़हब अबू हनीफ़ा का और मानेईन और मुजव्वज़ीने लअन भी दाखिले अहले सुन्नत हैं। हम उसे काफ़िर कहें न

मुसलमान, इतना जानते हैं कि हद भर का ख़बीस, मुफ़सिद, बंद दीन, ज़ालिम था। हर मुसलमान को उससे नफ़रत चाहिये, हर मुसलमान अपने मुसलमान होने में शक न करे, कि शक ईमान के खिलाफ़ है लेकिन हर वक़्त उससे कांपता रहे कि दिल खुदा के हाथ है जिधर चाहे फेर दे। मैं ज़ईफ़ और ईब्लीस सा दुश्मन हर वक़्त घात में, अल्लाह ही ईमान की ख़ैर रखे और दुनिया से मुसलमान उठाए। आमीन।

ग़ैरे खुदा को खुदा ठहराना शिर्क है और यह किस्म कुफ्र की सब किस्मों से बदतर है, इसके सिवा और किसी वजह से आदमी मुश्रिक नहीं होता। दीन में जो बात नई निकाली जाए और शरीअत में उसकी किसी तरह अस्ल न हो, बल्कि शरअ़ का काट करे तो वह बात बिदअते सय्येअह और गुमराही व ज़लालत होती है जैसे राफ़जियों, खारजियो, वहाबियों का मज़हब। अलम, ताजिये, मातम, मरसिये जिस तरह इस ज़माने में राइज हैं और जो ऐसी न हो उसमें कोई हरज नहीं होता जैसे मजलिसे मीलाद शरीफ़ वग़ैरह ब हैअते मुरव्वजा हरमैन शरीफ़ैन वग़ैरह के।

क़ियामत व आख़िरत का ज़िक्र

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने जो कुछ आइन्दा बातों की ख़बरें दीं, सब हक़ हैं। उन्हीं में से हैं क़ियामत की निशानियां, दज्जाल का फ़ितना, इमाम मेहदी की खिलाफ़त, ईसा अलैहिस्सलाम का आसमान से उतरना, दज्जाल को क़त्ल करना, आलम में दीन का डंका बजा देना, याजूज माजूज का निकलना, आफ़ताब का मग़रिब से तुलूअ़ होना, ज़मीन से एक चार पाया का बर आमद होना और हर मुसलमान के माथे पर असा से नूरानी निशान करना, काफ़िरों की पेशानी पर अंगूशतरी के स्याह दाग़ बनाना और इसके सिवा और बहुत अलामतें आना, फिर सूर का फूंकना, ज़मीन आसमान और उनके अन्दर जो मख़लूक़ है सब का फ़ना होना, पहाड़ों का रूई के गालों की तरह उड़ना, सितारों का टूटना, आसामानों का फटना, फिर जिलाने (ज़िन्दा करने) का सूर फूंकना, सब का जीना, मुर्दों का क़ब्र से निकलना, खुदा के हुज़ूर हाज़िर होना, हाथों में नामए आमाल का दिया जाना, नेकी बदी का हिसाब लेना, दो पल्लों के तराज़ू खड़े होना, उनमें आमाल तुलना, कुछ लोगों का बे हिसाब बख़्शा जाना।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम का शफ़ाअत

फ़रमाना, उनकी शफ़ाअत से बे गिनती गुनाहगारों का नजात पाना, दोज़ख की पीठ पर पुल सिरात रखना, जिसकी धार तलवार से ज़्यादा तेज़ और बाल से बढ़कर बारीक और हज़ारों बरस की राह है। फिर उस पर सब का गुज़रना, काफ़िरों का कट कर जहन्नम में गिरना, मुसलमानों का अपने आमाल के मुवाफ़िक़ जल्द या देर में उतरना, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम को हौज़े कौसर अता होना जिसका पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठा है, मुसलमानों का उससे पीना, फिर कभी प्यास न लगना और इसके सिवा जो खबरें हुज़ूर ने दी हैं सब हक़ हैं। जन्नत, दोज़ख दो मकान हैं, मुद्दत से तैयार और अब भी मौजूद हैं और हमेशा रहेंगे उनके लिये कभी फ़ना नहीं, जो उनमें जाएँगे कभी न मरेंगे, न बहिश्तियों की नेअमत न दोज़खियों का अज़ाब खत्म हो, आखिरत में मुसलमानों को बेशक खुदा का दीदार होगा मगर वह देखना मुक़ाबला व जेहत व रंग व कैफ़ियत से पाक होगा, इस क़द्र ईमान है कि देखेंगे यह नहीं जानते क्यूँ कर देखेंगे, खुदा आँख में समाने का नहीं और दीदार में फ़र्क़ आने का नहीं। अल्लाह नसीब फ़रमाए। आमीन।

मुतफ़र्रिक़ मस्अले

आदमी मरकर पत्थर नहीं हो जाता बल्कि उसकी समझ बूझ खूब बाक़ी रहती है। क़ब्र में नेकों की रूह व जिस्म को नेअमत मिलना और बदों की जान व तन पर अज़ाब होना हक़ है। मुनकर नकीर का सवाल हक़ है। करामाते औलिया हक हैं। कोई वली कैसे ही रुत्बे का हो अम्बिया की बुज़ुर्गी को नहीं पहुँचता, न कोई बन्दा उस रुत्बे को पहुँचे कि शरीअत के अहकाम उस पर से उतर जाएं। बे पैरविये शरीअत खुदा तक रसाई नहीं हो सकती। ग़ैर खुदा को सज्दा अगर इबादत की निय्यत से हो कुफ़्र है, वर्ना हराम। अम्बिया औलिया की क़ब्र को सज्दा भी यही हुक्म रखता है, और ग़ैरे कअबा का तवाफ़ रवा नहीं। नमाज़ में क़िब्ले की तरफ़ मुंह करना फ़र्ज़, जो और तरफ़ मुंह करके नमाज़ पढ़ना जाइज़ बताए कि खुदा का मुंह हर तरफ़ है हम जिधर चाहें नमाज़ पढ़ें काफ़िर है।

क़ुरआनो हदीस में बाज़ बातें ऐसी वाक़ेअ हुई जिनके मअना समझने में अक़्ल आजिज़ है, उन्हें मुताशाबिहात कहते हैं, उनमें हम अपनी तरफ़ से गढ़त बनावट नहीं करते बल्कि उन पर वैसे ही ईमान लाते हैं और उनका मतलब सुपुर्दे ब खुदा करते हैं। और जो बातें उनके सिवा हैं, उनसे वही

मअना मुराद हैं जो जाहिर में समझ में आते हैं, उनमें झूटी फेर फार करना बे ईमानी। मुर्दों को जिन्दों की दुआ और ख़ैरात से नफ़ा पहुँचता है और अल्लाह तआला दुआओं का कुबूल करने वाला और हाजतों का रवा फ़रमाने वाला है। मौला अली के बाप अबू तालिब काफ़िर मरे और ब लिहाज़ आर व हमियत, बा वजूद मअरेफ़त के दीने इस्लाम इख़्तियार न किया। बुख़ारी व मुस्लिम की अहादीसे सहीहा से कुफ़्र उनका साबित है मगर सब काफ़िरों में अज़ाब उनका अहवन अज़रूए अहादीस व मुत्तफ़का अलैहा की।

और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मां बाप को बुरा कहना रवा नहीं कि हम अल्लाह से उम्मीदे वासिक़ रखते हैं कि गरचेह वह अहदे नुबुव्वते इस्लाम से पहले मरे ज़मानए फ़तरत में, मगर हर गिज़ दोज़ख उन्हें न छुएगी। नमाज़ हर मुसलमान के पीछे हो जाती है अगरचेह बद मज़हबों और फ़ासिक़ों के पीछे मकरूह है। मोज़ों पर मसह दुरुस्त है। इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम शाफ़ई, इमाम मालिक, इमाम अहमद चारों इमाम हक़ पर थे, इन्होंने कुरआनो हदीस में ग़ौर करके दीन के मस्अले निकाले और उम्मत पर आसानी कर दी, ऐसे लोगों को मुजतहिद कहते हैं। इन चारों में जिसकी पैरवी कर लेगा शरअ पर चलने को काफ़ी है। किसी को बुरा समझना या उसके किसी मज़हब से नफ़रत करना बड़ी ना शुक्री, भारी बे समझ का काम है। न यह चाहिये कि हर तरफ़ भटकते फिरो एक का दामन पकड़ लेने में क्या हरज है। मुजतहिद जब फ़िक्र करके मस्अला निकालता है तो उससे कभी ग़लती भी हो जाती है मगर वह उस ग़लती पर भी सवाब पाता है।

शरीअत से ठट्ठा और उसकी तहक़ीर करना कुफ़्र है, हंसी की राह से कुफ़्र का मुरतकिब होना भी कुफ़्र है। जो कोई नुजूमी या पंडित या रम्माल की बातों पर यक़ीन लाए और उन्हें ग़ैब का हाल जानने वाला बताए काफ़िर हो जाए। खुदा की रहमत से बिल्कुल ना उम्मीद या उसके ग़ज़ब से बिल्कुल निडर हो जाना कुफ़्र है। ईमान ख़ौफ़ व रिजा के दरमियान है और जान लो कि खुदा का अज़ाब सख़्त और वही बख़्शने वाला महरबान है।

व सल्लल्लाहो तआला अला ख़ैरे ख़ल्क़िही मुहम्मदिंव व आलिहित तय्यिबीनत ताहिरीन वसहबिहिल मुकर्रमीना अजमईन 0